

अरविन्द ठाकुर

अरविन्द ठाकुर (जन्म 14 फरवरी, 1957) मैथिली मे एहि गजल संग्रहक संग एकटा नव अध्यायक आरम्भ क' रहलाह अछि। हिनक ई संग्रह ओहि सभ वर्जना अथवा स्पोषित धारणा सभ कें निर्मूल करत अछि जाहिक अनुसार ई बेर-बेर दोहराओल जाइत रहल अछि जे मैथिली मे गजल लिखब सम्भव नहि अछि। ई गजल संग्रह मैथिली गजलक दुनिया मे अपन सार्थक हस्तक्षेप सँ एकटा चुनौती प्रस्तुत करैत अछि, संगहि एकटा विश्वास सेहो जे मैथिली मे गजल होइत छैक आ से एहेन होइत छैक। विषय-वस्तु, भाषा, शिल्प आ शैली सौष्टवक कारणे ई कहल जा सकैत अछि जे गजलक आरम्भ भने जाहिया भेल हो मुदा अपना निजगुत छविक संग निस्सन आ समधानल डेग सँ पहिल बेर गजल सोझाँ आबि रहल अछि। पोथी मे संकलित प्रायः सभटा गजल विभिन्न पत्र-पत्रिकादि मे छपिक' पहिनहि चर्चित-प्रशंसित ाा' चुकल अछि। किदु 'शेर' त' एतेक प्रसिद्धि पाबि चुकल अदि जे आब ओ आम बोलचालक भाषा मे व्यवहृत होबय लागल अछि।

एहि संग्रह सँ पूर्व वर्ष 1993 मे अरविन्द ठाकुरक काव्य-संग्रह 'परती टूटि रहल अछि' प्रकाशित भ' चुकल अछि जे 'परती टूट रही है' नाम सँ अजित कुमार आजाद द्वारा हिन्दी मे अनूदित भ' एही वर्ष 2011 मे प्रकाशित भेल अछि। वर्ष 2007 मे हिनक कथा-संग्रह 'अन्हारक विरोध मे' प्रकाशित भेल छल। पत्रकार आ स्तम्भ लेखकक रूप मे चर्चित अरविन्द ठाकुरक मोन समाज-सेवा मे अत्यधिक रमैत छनि। कहि सकैत छी जे ओ एही तरहें समाजक वंचित समुदाय सँ जुड़ैत छथि आ हुनक पीड़ा आ संघर्ष कें अपन स्वर दैत छथि। अपन 'लीक' अपने बनेबा मे माहिर 'अरबिन' एहि गजल-संग्रहक संग जे एकटा लीक बनौलनि अछि–ताहि पर मैथिली गजल छाती तानिक' चलत, ताहि मे मिसियो भरि संशय नहि।

सम्पर्क : विप्लव भवन, चकला-निर्मली, वार्ड नं.- 7, सुपौल- 852131 (बिहार)
ईमेल : arvind.viplava@yzahoo.in मो.- 09431091548, 09708819666

Navarambh
Patna

बहुरूपिया प्रदेश मे

अरविन्द ठाकुर

बहुरूपिया प्रदेश मे

अरविन्द ठाकुर

बहुरूपिया प्रदेश मे

मैथिली गजल संग्रह

अरविन्द ठाकुर

नवारम्भ
पटना

बहुरूपिया प्रदेश मे
(मैथिली गजल संग्रह)

प्रथम संस्करण : नवम्बर, 2011
मूल्य : 125 टाका (सजिल्द)
75 टाका (अजिल्द)

प्रकाशन सौजन्य
विप्लव फाउन्डेशन
चकला निर्मली, वार्ड नं.-7
सुपौल-852131 (बिहार)

प्रकाशक
नवारम्भ
21, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पटना-20
Email : ajitazad@ibibo.com
मो०-09234942661

मुद्रक
प्रोग्रेसिव प्रिन्टर्स
शाहदरा, नई दिल्ली

Bahurupiya Pradesh Me
Collection of Maithili Gazals By Arvind Thakur, November 2011,
Price : Rs 125/- (Delux), Rs. 75/- Paper back

अपन पौत्री आर्या, क्षिति आ पौत्र दिव्यांशुक लेल
एहि शुभकामनाक संग
जे ओ सभ एहि बहुरूपिया प्रदेश कें
नीक जकाँ चिन्हथि आ चिन्ह कें अपना लेल
सुन्दर आ सुगम मार्ग प्रशस्त करथि।

अर्ज करक अछि जे...

❒ कोनो पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित हमर पहिल हिन्दीक रचना 'गजल' छल। मुदा ओ हमर मुख्य विधा नहि भ' सकल। हिन्दी मे प्राय: दू दर्जन गजल लिखल अछि। आ से, छिटपुट प्रकाशितो भेल अछि। बस! मैथिली मे ओना रचनाक प्राय: सभ विधा हमरा आकृष्ट करैछ आ तकरा चुनौती मानि गिनतीक किछु गीत, दू तीन दर्जन हाइकू, किछु कुंडलिया आ दोहा सभ लिखल। मैथिली मे गजल लिखबाक बात त' हमर कल्पनो मे नहि आयल छल।

❒ मांक कैंसरक इलाजक क्रम मे दोसर बेर ओहि वर्ष (2008)क मइ मास मे मुम्बइ मे अपन मांझिल पुत्र मिठ्ठू (किसलय)क पनवेल स्थित डेरा पर रही जखन अजित कुमार आजादक मिसकॉल हमर सेलफोन पर आयल। अजितक मिसकॉल मैथिली जगत मे प्रसिद्ध अछि, माने जे ओ अहाँ सँ गप करय चाहैं छथि तेँ अहाँ हुनका कॉल-बैक करिअनु। अजित सँ अहाँक निरन्तर गप होइए त' बुझू जे अहाँ मैथिली साहित्यक गतिविधि मे अद्यतन छी। तेँ एहि लोभ वशात हुनका कॉल केलियनि। लाइन पर अबिते हुनक फरमान जारी भेल 'अहाँक दू-तीन टा मैथिली गजल चाही, फौरन।' हम कहलियनि जे 'हम त' मैथिली मे गजल लिखबे नहि कएल अछि', मुदा ओ कहाँ मानय बला! एहि बेर बजलाह जे 'नहि लिखने छी त' एखन लिखू, मुदा एक घंटाक भीतर हमरा मैथिली मे लिखल अरविन्द ठाकुरक कम सँ कम दू टा गजल चाही।' हम लाख निहोरा केलियनि, 'अओ बाबू', 'अओ नुनू' सँ 'अओ सरकार' धरि अयलियनि, मांक बीमारी सँ मोन चंग होयबाक कथा कहलियनि, ब्लू-बेल बिल्डिंग केर छह मंजिला स्थित फ्लैट मे लिखब-पढ़ब आ मूड बनब–सभ असुविधाक मनगढ़ंत कथा बढ़ा-चढ़ाक' कहलियनि। मुदा ओ जे मानि गेला त' 'अजित' केना हेताह! ओ वार्निंग दैत कहलनि–'मोन राखब, एक घंटा, बस!' आ सम्पर्क भंग क' देलनि। मिठ्ठू केँ हमर साहित्य-प्रेम सँ गर्व होइ छनि। ओ, बाबू (हमर ज्येष्ठ पुत्र अभिनय) आ राजा (हमर कनिष्ठ

पुत्र अनुनय) कविता लेखन मे हाथ भांजैत रहलाह अछि, किछु प्रकाशितो भेल छनि। तेँ मिट्ठूक डेरा मे पढ़बाक लिखबाक खूब सुविधा। हम जखन मुम्बइ आबै छी त' अंग्रेजी कि हिन्दीक पाँच दस टा किताब हमरा लेल भेटिये जायत। अजित सँ वार्ता समाप्त होइतहि मिट्ठूओ ठोकि देलनि 'लिखियौ पापा।' बस त' आब की छल। सर्दात संग रहनिहार अपन डायरी निकालि हम भिड़ गेलहुँ आ जेना तेना तीन चारि टा आधा अधूरा, पूर्ण अपूर्ण गजल लिखा गेल (जकर बाद मे संशोधित रूप एहि संग्रहो मे आयल अछि) ...आ, एक त' नहि मुदा डेढ़ घंटाक बाद हम अजित केँ हुनकर जीतक बधाइ-स्वरूप किछु गजलक पाँती (शेर) सेलफोन सँ लिखा देलियनि। ओ लिखलनि आ समापन मे बजलाह—आर लिखू, लिखैत रहू, हमरा किछु आर चाही। ...त' एतहि सँ शुरु होइत अछि हमर मैथिली गजल लेखन यात्रा।

❐ एहि संग्रह मे आयल सभटा गजल उत्प्रेरक रूप सँ मैथिलीक युवा पीढ़ीक सर्वाधिक सशक्त हस्ताक्षर अजित कुमार आजादक सम्पत्ति अछि। दुराग्रहक सीमा छुअइत हुनक आग्रह नहि होइत त' ई गजल सभ किन्हु हमरा माध्यमे आकार नहि पाबि सकितय। दू टा तीन टा सँ बढ़ैत हुनक आग्रह गजलक शतक धरि पहुँचि गेल आ लिखैत चलि गेलहुँ। ताहि मे सँ किछु गजल सभ एहि संग्रह मे प्रकाशित भ' रहल अछि।

❐ मांक एम.आर.आई. जाँच डेढ़ मासक बाद हेबाक तिथि तय भेल छल तेँ हम हुनका पोताक अभिरक्षा मे छोड़ि सुपौल आबि गेलहुँ। आबि त' गेलहुँ मुदा मोन सदिखन हुनके पर टांगल रहैत छल। ने किछु पढ़ि पबैत रही, ने टीभी देखि पबैत रही, ने कोनो सार्वजनिक-सामाजिक गतिविधि। किछु लिखबाक त' कथे नहि। एहने उद्विग्नता मे समय बीत रहल छल कि जूनक अन्तिम सप्ताह मे मिट्ठूक फोन आयल आ ओकरे संग ई सुखद संवाद कि एम.आर.आई.क रिपोर्ट सकारात्मक अछि आ डाक्टर सभ रेडियोथेरापी आ कीमोथेरापीक उपचार सँ भेल प्रगति सँ संतुष्ट छथि आ फेर तीन मासक बाद फॉलो अप ले' बजौने अछि तकर शुभ सूचना भेटल। मोन स्थिर भेल।

❐ मिट्ठूक फोनक तीन चारि दिन बाद प्राय: 2-3 जुलाइ केँ अपन अभ्यास डायरीक पन्ना सभ उनटयलौं। मुम्बइ मे लिखल गजलक आवश्यक

संशोधनक बाद हाथक जेना सभटा बान्ह टूटि गेल। एहन धारा-प्रवाह जे गजलक मिसरा, शेर, रदीफ, काफिया, बहर, गिरह सभ केँ सम्हारब कठिन। एक घंटा लेल अपन राइटिंग-टेबुल पर बैसै मे मोन औनाबय लगैत छल से अवधि बढ़ैत बढ़ैत दू-तीन-चारि होइत छह-सात घंटा धरि पहुँचि गेल। मोन मे हरदम सुतैत-उठैत-घुमैत गजले-गजल घुमय लागल। इएह स्थिति हमर 92-93 मे भेल छल जकर परिणाम स्वरूप 'परती टूटि रहल अछि' आयल छल। हमरा लेल ई अनमोल अवसर छल, हम एकरा चिन्हलहुँ आ एकर जतेक लाभ ल' सकैत रही से लेबाक प्रयास कयल।

❐ आसान हुअय कि कठिन, साहित्यक प्राय: सभ विधाक रचना कोनो भाषा मे कयल जा सकैत अछि किन्तु ई ध्यान राखब आवश्यक जे सभ विधाक अपन मिजाज होइ छै। मैथिलीक मिजाज केँ देखैत जँ एहि मे उर्दू हिन्दी गजलक मिजाजक नकल करबाक प्रयास कयल जाइत त' एकरा धृष्टतो त' नहिए टा कहल जायत, सफलता सेहो नहि भेटत। तेँ मैथिली मे गजल लिखय सँ पहिने मैथिलीक मिजाज केँ बूझब जरूरी आ तकर प्रयास हम कयल अछि, कतेक सफल भेल, से नहि कहि।

मैथिलीक मिजाज कि सीमा (ई मैथिलीक नहि, हमर अपन सीमा भ' सकैत अछि)केँ देखैत गजलक व्याकरण (रदीफ, काफिया, मिसरा, मतला, मकता आदि)क स्थापित मापदंडक कसबट्टी पर हमर सभ गजल खरा उतरत तकर दावी त' नहिए टा अछि बल्कि हम त' ई सकारय चाहै छी जे मैथिलीक स्वभाव, शब्दावली, वाक्य रचना आ हमर सीमाक कारणेँ प्रस्तुत गजल मे कएक जगह सुधि पाठक लोकनि केँ त्रुटि भेटि सकैत छनि। किछु त' हमर अपन नजरि मे आयल अछि। गजल सभक किछु शेर मे बहरक दोष भेटि सकैत अछि जे मैथिलीक नहि, हमर सीमा थिक।

❐ गजल अरबी शब्द थिक मुदा रचनाक विधाक रूप मे अरबी कशीदाक तर्ज पर एकर आविष्कार इरानी सभ कयने छल। अपना देश मे एकर प्रथम रचनाकार अमीर खुसरो भेलाह। किछु लोक कबीर केँ पहिल गजलगो माने छथि। ई एकटा कठिन विधा थिक मुदा ततक लोकप्रिय जे सामान्य गपशप मे अपन पक्ष वा विचारक समर्थन मे दोहा आ शेरक प्रयोग

अनेक रास लोक करैत भेटताह। संभवत: ई एकर लोकप्रियतेक प्रमाण अछि जे बेसीतर नव लेखक गजले सँ अपन रचनाक प्रारंभ करै छथि (एकर प्रमाण स्वरूप यदा कदा प्रकाशित होइत क्षेत्रीय, स्थानीय, महाविद्यालयीय पत्रिका सभक अवलोकन कयल जा सकैत अछि) चाहे ओ गजल कहयबाक पात्रता नहिए रखैत हो। संभवत: लोकप्रियताक अतिरिक्त एकर 'आसान' लागब सेहो एकटा कारण भ' सकैछ मुदा एक रत्तीक हेर-फेर सँ (नुक्ता सेहो कहि सकै छी) खुदा जुदा भ' जाइ छै। तखन ने ओ दोहा रहैत अछि आ ने गजल। स्थापितो रचनाकार सभ एहि भ्रम मे पड़ल छथि आ प्राय: अपन असफलता पर अपन लिखलाहा लेल नव-नव नाम खोजैत छथि जखन कि ओ वस्तुत: कोनो चीज नहि रहि नाचीज भ' जाइत अछि।

❑ गजल मे उच्चारणक महत्व कें मानैत हम एकटा अतिरिक्त छूट लेबाक प्रयास कएल अछि, से ई जे हमर क्षेत्र मे (सुपौल) आमजन(हमहुँ) जे मैथिली बाजैत अछि ताहि उच्चारणक अनुसार गजल मे शब्दक अक्षरी (spelling) लिखल गेल अछि। मानक मे एकरूपताक संकट आ मुद्रणक सुविधा असुविधा अपन जगह अछि। हम जे कयल अछि से हमर मजबूरियो छल। शेर सभक प्रवाह अबाधित रखबा लेल लिखै काल मे पहिने हम ओकरा लय-सुर मे बाजैत रही आ तखन प्रवाहक रिद्मक अनुसार भेल उच्चारण जकाँ हम अक्षरी लिखैत रही। तें पाठक कें जँ असुविधा होइन त' हम क्षमाप्रार्थी छी, ओना एना करयवला मैथिली मे हम पहिल लोक नहि छी। ई बात अलग जे हम मजबूरी मे केलहुँ अछि से आन लोक सभ आग्रह मे कयने हेताह। एके शब्दक अक्षरी मे जँ वैभिन्य भेटय त' सेहो संभव-ओ उच्चारण आ रवानी(प्रवाह)क रस्साकसीक कारण।

❑ हमर प्रथम संग्रह 'परती टूटि रहल अछि' काव्य संग्रहक भूमिका केदार कानन लिखने छलाह जे वयस मे हमरा सँ अढ़ाय वर्ष छोट छथि। दोसर संग्रह 'अन्हारक विरोध मे'(कथा संग्रह)क भूमिका अजित कुमार आजाद लिखलनि। जे वयस मे हमरा सँ 12 वर्ष छोट छथि। भूमिका मे ओ सभ की लिखलनि से हम प्रकाशनक बादे पढ़ने छलहुँ। एहि परम्पराक

पाछाँ हमर ई सोच आ कि लोभ स्वार्थ छल जे कोनो रचनाक मूल्यांकन पुरना नहि नवका पीढी करैत अछि। अपन अगिला पीढ़ी(जँ वयस कें वरिष्टता मानल जाय) मेँ भूमिका लिखयबाक परम्परा (मैथिली मे ई अभूतपूर्व परम्परा अछि)क पालन हम अपन एहि तेसरो संग्रह मे करितहुँ त' हमरा नीक लगितय मुदा हमरा लग एहि संग्रहक सन्दर्भ मे ततेक बात कहबा लेल रहय जे हम स्वयं अहाँ सभ सँ सम्बोधित होयबाक लोभक संवरण नहि क' सकलहुँ। तें किछु अर्ज हमरे दिस सँ।

❑ मैथिलीक गप छोड़ू, हिन्दीयो मे गजलक क्रम मे रचनाकार लोकनि विभिन्न अनुभव सभ सँ गुजरल छथि। 'हरिऔध' अपन खड़ी बोलीक काव्य रचना मे गजल लेल प्रचलित 'बहर'क प्रयोग कयने छथि ओ एक ठाम कहै छथि जे 'जेहन सुविधा सँ खड़ी बोलीक क्रिया सभ उर्दू मे खपि जाइत अछि, हिन्दी छंद मे नहि'। कहबाक हमर तात्पर्य ई जे भाषा, विधा आ रचनाकारक सुविधा आ सीमाक अनुसारें कोनो रचना अस्तित्व मे अबैत अछि। मैथिली मे गजल कहैत बेर सेहो सुविधा आ सीमा कारक बनैत अछि। गजल आ दोहाक बीच जे सूति भरिक अंतर छै ताहि सँ पाठक कि स्वयं रचनाकार कने काल लेल भ्रमित भ' सकैत अछि मुदा सूतिये भरिक सही, फर्क त' छै।

प्रस्तुत रचना सभ मे ई सूति भरिक अंतर खूब स्पष्ट जकाँ देखायत से हमरा उम्मीद अछि। गजलक एकटा आर मौलिक मान्यता छै, एके गजल मे होइतहुँ प्रत्येक शेर स्वयं मे पूर्ण होइछ, प्रत्येक शेरक मजमून अलग होइछ। प्रत्येक शेर मुकम्मल एहसास आ चेतना कें स्वयं मे समेटने रहैछ। जेना कि फिराक गोरखपुरी सेहो कहैत छथि जे 'गजलक प्रत्येक शेर अपना मे एक दुनिया अछि। प्रत्येक शेर अपना-आप मे एक सम्पूर्ण विचार वा संवेदना होइछ।' ईहो बात प्रस्तुत गजल संग्रहक हमर गजल सभ मे भेटत, से प्रयास हम कएलहुँ अछि। कतेक सफल भेलहुँ, से निर्णय पाठक करथि।

❑ एहि गजल संग्रह सँ जुड़ल कएक टा रेकार्ड सेहो बनल। 24 दिन मे 66 गोट गजल लिखबाक रेकार्ड हमर नाम, त' मिसकॉलक रेकार्ड त' अजितक रहबे करनि, हमर गजल सभ पर वाह-वाह करैक रेकार्ड सेहो

बैह बनेलनि।

एहि संग्रहक प्राय: सभटा गजल शुरु होइ सँ अन्तिम रूप धरबा धरि फोन पर बेर-बेर अजित कें सुनाओल गेल आ एक बेर त' ओ अपन सेलफोनक लाउड स्पीकर ऑन कए एकरा राँची मे जन-संसद (सगर राति दीप जरय) मे सेहो रखलनि। फोन कॉलक एहि सम्पूर्ण अवधि कें जोड़ल जाइ त' एहि रेकार्ड सँ चकाचिदोर लागि जा सकैत अछि।

❐ बहुत रास रचनाकार कलाक अनेकानेक आवरण मे स्वयं कें प्रस्तुत क' अपन रचना मे अपन वास्तविक जीवन सँ भिन्न जकाँ व्यक्त होयबाक बाजीगरी करैत छथि। हुनका अपन रचना लेल हुनक अध्ययन, मनन, चिंतन वा अनुकरण सँ सिरहा भेटैत छनि। हम अपन रचना लेल सीधे जीवन सँ सिरहा लैत छी, तें हमर रचना मे शास्त्रीयता किंवा अभिजात्य भनहि नहि हो, ओहि मे जीवनानुभवक अभिव्यक्ति अवश्य भेटत। अपन बात कहबाक लेल हमर रचनाकारक कला पक्ष कें दम साधि भदेस पक्षक नियंत्रण मे रहय पड़ैत छैक। हम जे कहय चाहैत छी से महत्वपूर्ण छैक, ताहि लेल व्याकरण टूटय कि विधा विशेषक मापदंड, तकर हमरा परवाहि नहि अछि। ओकरा भल चाही त' हमर सहायक हुअए, बाधा ठाढ़ नहि करए।

❐ हम अपन अभिव्यक्ति लेल कथा, कविता, हाइकू, लेख आदि साहित्यक अनेक विधाक उपयोग कएलहुँ किन्तु आइ हम गछय चाहैत छी जे हमर जीवनानुभव बेसी स्पष्ट रूप मे गजलहि मे व्यक्त भेल अछि।

❐ एहि संग्रह मे आयल प्राय: सभटा गजल हमर माँक कैंसर सँ लड़ैक अवस्था काल मे लिखायल छल। माँ आब नहि छथि, कैंसर हुनका गीलि गेलनि, तखन ई संग्रह आबि रहल अछि, त' ओ बड्ड मोन पड़ैत छथि। ओ भेलीह त' हम भेलहुँ, हम भेलहुँ त' ई गजल भेल। तें ई गजले नहि, हमर सभ रचना त' हुनके रचनाक रचना।

–अरबिन
(अरविन्द ठाकुर)

अनुक्रम

41 : हवाक आँचर धएने लुत्ती जानि कखन धधरा भ' जेतै

42 : बिनु खयने गेला ओ, घरनी कें तारि गेला

43 : निन्न मे नेना जे बिहुँसल, झक जगमग चान जागल

44 : मोन अहाँ के निछहा पागल

45 : कतहु रूद्र त' कतहु महेस

46 : के कोना कें पेट भरैए

47 : हवा नियम सँ बहवे करतै

48 : पेट सँ, फेर देह सँ जोड़ल गेलौं हम

49 : मेन्ह पड़ै छै नित घर-घर मे, घरवै सभ कंगाल बनल छै

50 : कोना अजुका दिन ससरतै, राति कटतै हौ भजार

51 : कानिक' बड़ीकाल नेना हारिक' चुप भ' गेलै

52 : मोन के छह पाँच छोड़ू, गिरह राखब नीक नहि

53 : की कही एहि बाढ़ि मे डगरक कथा खिस्सा खराब

54 : एहि अकाबोन मे जँ होइतय मीत कोनो

55 : क्षुद्र नर सँ इन्द्र के अवतार भेला

56 : कथी जोतवय, कतय रहबय, सभ डगर छेकल छै बाबू

57 : राति मे अन्हार रहै, अन्हार छै, अन्हार रहतै

58 : दुख कतेक छै तकर मात्रा मुँह सँ बाजल जायत नहि

59 : डोरि सन जिनगी मे अछि सगरे पड़ल गिरह हजार

60 : छै अमरीकी भोज मे बहु-विध व्यजंन, धनि भाग

61 : नहि मरल अछि, ई कने बीमार टा अछि

62 : छिछिआइछ उत्कंठा हमर, खन आर लग खन पार लग

63 : जनहित के एहि बजट मे एखन वित्तीय क्षति अनुमाने पर अछि

64 : गीत अभावक बनि गेल फकड़ा

65 : एना किए मन्हुआयल रहै छह

66 : चान पर बस्ती बसाओल जा सकै छै

67 : तुरछल हमर सौभाग्य हमर छाहरिक छाहरि सँ भागय

68 : मदन हमर आँखि पर रंगीन सन जाली लगाबय

69 : भेड़िया धसानक भीड़ सँ अछि हमर ढब-ढाँचा अलग

70 : नहि बाबा के सत्य-अहिंसा, नहि काका के पंचशील

71 : लोके लग सुदिभरना लोक

72 : नहि सुरुज के रौद मे, नहि आगि के धधरा मे छै

73 : बाढ़ि मे झिंगुर जकाँ सभ लोक चिचिआबैत रहल

74 : चान जे कि घोघ मे छै सैह बुर्का मे नुकायल

75 : मधुशाला मे बैसि करय छथि अपन आपन कुनबा के गप

76 : कतेक नांघलहुँ टिल्ला टाबर

77 : कतेक दुख देखल, कतेक संत्रास भोगल

78 : जे सोचै छी वैह जँ होइतय त' की छल

79 : टका तंत्र के अद्भुत माया, महिमा एकर अपरम्पार

80 : खगल लग दानी सन आबी, ई केहन दन गप लगैए

नइ पूजीक आन-बान, नइ ओकर शान बचत

नइ पूजीक आन-बान, नइ ओकर शान बचत
नइ जखन खेतिहरक ठोर परहक गान बचत

दूध लेल नेना आ रोगी हाकरोस करत
नइ जखन गाम मे मालक बथान बचत

यूरो आ डॉलर सँ पेट भरैक भांज करू
जँ खेतक आरि नइ, आ ने मचान बचत

मैम ककाक कोरामे बेदरा-सन खेल रहल
कोना कही, आब कोना भारत महान बचत

आयातित बीया आ पटौनी अकास सँ
दैव आ विदेश बलेँ कोना किसान बचत

हरदी नइ, हरेँ नइ, बनियाँ सरकार मे
'अरबिन' पेटेन्ट सँ की बासमती धान बचत

छोड़िक' सत्यक डगर बइमान बनबह

छोड़िक' सत्यक डगर बइमान बनबह
हओ कोना कें आब तों बलमान बनबह

माटि कें ग्रसने अन्हरिया ऑक्टोपस
तखन तोहर जिद कि तों दिनमान बनबह

आब अयोध्या मे पुजाबय छथि दशानन
जान नहि बचतह जँ तों हनुमान बनबह

आब विधर्मी हैब आवश्यक जकाँ अछि
नहि उचित जे राम कि रहमान बनबह

आब की 'अरबिन' बुढ़ारी मे उधारी
पैंच केर शक्ति सँ शक्तिमान बनबह

टीभी कें आँखि अपन, रेडियो कें कान कहब

टीभी कें आँखि अपन, रेडियो कें कान कहब
तकनीकी मौज मे मोन कें विमान कहब

दसहत्थी साड़ी केर दिन आब गिनायल अछि
बिकनी पहिरि लेब, घर कें दोकान कहब

अमरीकी मीता संग अनैतिक करार लेल
अप्पन किछु दुश्मन के हमहुँ इरान कहब

गोगुल्स लगौने आ कोट-पैंट-हैट पहिर
ट्रैक्टर चलाओत जे तकरे किसान कहब

बाढ़ि आ चुनाओ, सगर विपदा केर मारल हम
दान-अनुदान कें दैवक वरदान कहब

कलजुग असवार अछि 'अरबिन' कपार पर
जे हमर ठोंठ धरत, तकरे भगवान कहब

कुकुर गर मे माल जे पहिरा रहल अछि

कुकुर गर मे माल जे पहिरा रहल अछि
निर्लज्ज किरदानी-मुदित मुस्का रहल अछि

आत्महंता खेतिहरक जानमारू सख देखू
बीहनि वायुयान सँ मंगबा रहल अछि

एहि समाजक रूढ़ि भेल अछि घोड़नक ओछाओन सन
प्रेम मे भीजल बतहबा ताहि पर ओंघरा रहल अछि

विश्व-फुलबाड़ीक जेकर स्वप्न छल, से
काँट केर कोनो बोन मे औना रहल अछि

आदिवासी सड़ल भातक रस मे भासल
नगरवासी मौज मे शैम्पेन छलका रहल अछि

पेट मे नइ खढ़ मुदा 'अरबिन' ओ मजगूतीक मादे
विश्व-पंचायत मे नंगटे ढोलहो पिटबा रहल अछि

आँखि कें मुनने अदौ सँ रौद अन्हरिया बनल

आँखि कें मुनने अदौ सँ रौद अन्हरिया बनल
खेतिहर केर देह केंचुल, मोन मंतरिया बनल

लोक-वेदक रंग फक आ गिरगिटी शासक सभक
लाल, हरियर आ कहियो रंग केसरिया बनल

गाम मे डिबिया जरल अछि राति सँ लड़बाक लेल
मेट्रोपोलिटन टाउन मे अछि राति दुपहरिया बनल

चमचा, चारण आ मोसाहिबक भाषा मे बाजै छी
श्रीमन्तक थपड़ी केर सम्मुख हम छी पमरिया बनल

फूसि नंगटे नाच नाचय सामुहिक बेलज्ज भए
मुँह नुकयने कात मे अछि साँच एकघरिया बनल

बेस चमकै छल मुखौटा मंच पर सम्मान लैत
निज नजरि मे 'अरबिन'क ई गोर मुँह करिया बनल

भरल पड़ल छै, कोन कमी छै, दुनिया मे होशियार बहुत छै

भरल पड़ल छै, कोन कमी छै, दुनिया मे होशियार बहुत छै
चोरि, ठगी कि लूट, डकैती, दुनिया मे रोजगार बहुत छै

आन-कान, विश्वास होअए त' ककरा बुने मम्हरने औ
युद्ध ठानि लेअय एसगर जखनो खेतिहर लग हथियार बहुत छै

व्यसनी लेल बजार छोट आ रकटल लेल संसार ओछ छै
बुन्न कें सागर माननिहार लेल अंगना आ दुआर बहुत छै

विश्वग्राम केर कुइर आँखि पर अन्हारजाली पूँजी केर
मिसियो भरि इजोत नदारति, दीपक तर अन्हार बहुत छै

अर्थतंत्र केर पसरल माया, तकनीकी सम्बन्ध बनि रहल
अपन खबरि अपने नहि भेटय, कहबा लेल अखबार बहुत छै

बिन तरजू आ बाट बिकाबय लेल, मनुक्ख तैयार सदति अछि
'अरबिन' जखन बजारू भेलौं, कीनबा लेल दरबार बहुत छै

क्लस्टर बम, प्रक्षेपास्त्र टामहॉक हमरे छल

क्लस्टर बम, प्रक्षेपास्त्र टामहॉक हमरे छल
जीवित लहास बनल जे इराक हमरे छल

भारत, सोनार बंग आ कि पाक हमरे छल
'एकोहं बहुस्याम'-ई मंजाक हमरे छल

एखन भने परमाणु कचरा केर याचक छी
'विश्व-गुरु हम छी' से वेद-वाक् हमरे छल

गाँधी छलहुँ जखन हमरे सुराज छल
दागी पर खादी केर झक पोशाक हमरे छल

हमरे ओ मुंड छल जे कटल रैजकी सँ
बाजारक बीच पड़ल कान-नाक हमरे छल

हमरे छल डिडिर जे बाँटलक सहोदर कें
अधरतिया आजादीक ढोल-ढाक हमरे छल

'अरबिन' रहबैया छी रोगहा समाजक हम
लसनि जकर लागल अछि से सुजाक हमरे छल

जनपथ छोड़ि राजपथ जायब, से हमरा की नीक लगैए

जनपथ छोड़ि राजपथ जायब, से हमरा की नीक लगैए
उखरि मे मूड़ी घोसिआयब, से हमरा की नीक लगैए

बक सँ कौआ बनल ठाढ़ छी काजर-घर मे सकदम भेल
ताहि पर चानन-ठोप लगायब, से हमरा की नीक लगैए

चोरि करब हम, मुदा शान सँ चौकीदारक संग रहब
लाज-शरम ताखा पर राखब, से हमरा की नीक लगैए

भ्रष्ट दुपहरा केर एहन बहसल बसात मे बतहा सन
लंक-दहन लेल आगि पजारब, से हमरा की नीक लगैए

छमा करू 'अरबिन' उचित किन्नहु नइ बाजब
सुधिजन आगाँ गाल बजायब, से हमरा की नीक लगैए

छाती त' तानल छल शस्त्र उठेबाक बेर

छाती त' तानल छल शस्त्र उठेबाक बेर
कोढ़ किए काँपि रहल लाश उठेबाक बेर

पात बिछैबाक बेर लोकक करमान छल
यार सभ अलोपित भेल ऐंठ उठेबाक बेर

आयातित महरानी फाहा बुझाइत छल
घोल किए परमाणुक भार उठेबाक बेर

दाउन बेर धानक त' मारिते महाजन छल
एक्कहुटा जन नहि नार उठेबाक बेर

प्रवचन मे घोंसय छथि धैरज केर महिमा ओ
सभटा बिसरि जाइ छथि कष्ट उठेबाक बेर

'अरबिन' उतारा किछु विध्वंसक होइत अछि
नीक जकाँ सोचैक छल प्रश्न उठेबाक बेर

देह-गात, हुनक छवि, किदन-कहाँ पहिने सन

देह-गात, हुनक छवि, किदन-कहाँ पहिने सन
मुस्की मे हुनक मुदा बात कहाँ पहिने सन

पंचतारा तं जुटलै वातानुकूलित पाग मे
सिहकै अछि पुरिबा बसात कहाँ पहिने सन

होटल मे बैरा सभ 'चावल' परसैत अछि
गामो मे बासमतीक भात कहाँ पहिने सन

एखनो नहि छोड़लनि ओ शतरंजी चालि, मुदा
शह देताह तकर बुतात कहाँ पहिने सन

पूता सभ घूरि आयल डिल्ली-पनिजाब सँ
सूखल अछि मुँह, देह-गात कहाँ पहिने सन

शिथिलता भेल मिथिलासँ मिथिले नदारति अछि
पहिने सन फूल कहाँ, पात कहाँ पहिने सन

रावण के राज मे के भजतै राम-राम

रावण के राज मे के भजतै राम-राम
सभटा विभीषण कें अलगे सँ राम-राम

पाथर के आगाँ मे मनुक्खक की मोल छै
अक्षर कि वैद्यनाथ, एकहि रंग धाम-धाम

जाति-धर्म-गोत्र मे बाँटल सभ चास बास
एहि घर मे बास नहि, विष्ठा अछि ठाम-ठाम

उनटल अछि ताबा अधिसंख्यक पेट पर
राजधानीक अखिल-जगत गपशप मे ताम-झाम

मूल्यहीन हटिया मे अद्भुत समतूलवाद
सोना की, गिल्लट की, बिरथा सभ दाम-ताम

गीत, गजल, कविता कि खिस्सा यौ 'अरबिन'
जी काज थिक अनेरुआ, तें छोड़ू ई काम-धाम

सकल जनम जग दुखिया भेल

सकल जनम जग दुखिया भेल
सुख कपूर केर पुड़िया भेल

आस अकास मे ठेकल छल
चान पर बैसल बुढ़िया भेल

तिमिरक तानल घोघ देखिक'
सुरुज केर मुँह करिया भेल

देश मे एतेक ने पूजी आयल
धोती घटिक' धरिया भेल

राजमुकूट सँ सजल छुछुन्नर
सभटा बघबा नढ़िया भेल

रातिक जे एकबाल बढ़ल
दुर्लभ सगर इजोरिया भेल

वैश्विकरण-काल मे 'अरबिन'
जे नहि भेल से बढ़िया भेल

की करी फुसकी, सगर छै घोल मीता

की करी फुसकी, सगर छै घोल मीता
लालसा हम्मर बिकल बिनु मोल मीता

गाम भरि हम्मर गमक पसरत कोना कें
देह ओढ़ल हमर काछुक खोल मीता

गोष्ठी मे स्वच्छता पर गरजि अयलहुँ
हमर अप्पन घरहि मारिते झोल मीता

पंचबरसा बाट पर, जहिया सँ मतदाता भेलहुँ
चप्पलक कएटा खिआयल सोल मीता

राम-नामक सत्यता सँ गाम कलपय
नगर मे बाजय विवाहक ढोल मीता

देश के इतिहास बदलब आइ ओहने हाथ मे
नहि बूझल जकरा एकर भूगोल मीता

चेत क' अबियह कि हमर गाम नन्दीग्राम मे
लक लगौने 'सेज' पर, गिद्ध सभक लोल मीता

जकर किरदानी सँ उजड़ल गाम 'अरबिन'
मधु जकाँ छै ओकर मुँहक बोल मीता

पग-पग पोखरि, माछ-मखान, आब कतय

पग-पग पोखरि, माछ-मखान, आब कतय
सुमधुर मुस्की, मुँह मे पान, आब कतय

दूर-दूर धरि पसरल अछि लफुआ केर जंगल
मह-मह करए खेत-खरिहान, आब कतय

भरल पड़ल अछि घर-घर मे विरहनी नायिका
अकच्छ करथि पिया बइमान, आब कतय

विद्वतजन क' रहल छथि लबड़ै-बतकुट्टनि
घर-घर मानस केर गुणगान, आब कतय

कतय अलोपित 'अरबिन' दोपटा-पाग, नइ जानी
पंडिज्जीक पुरनका शान, आब कतय

हाजरी बनयबा लेल बाजब जरूरी छै

हाजरी बनयबा लेल बाजब जरूरी छै
मात्र चलैत रहबा लेल चलब जरूरी छै

जखन-तखन पहिरी मुखौटा मुस्कान केर
नोर कें नुकयबा लेल हँसब जरूरी छै

सुनै छियै सूर्य ठाढ़ भेल छथि चुनाओ मे
बेसी किछु लालटेन कीनब जरूरी छै

टीस आ तनाओ केर मान भंग करबा लेल
जरूरी छै टिमटाम, किछु गहसब जरूरी छै

गीत-गजल-कविताक धरगर हथियार लए
अनटेटल लबड़ै सँ भिड़ब जरूरी छै

दीपक बेगरता बुझाइत रहय सदिखन, तें
अन्हरिया बाट चलैत पिछड़ब जरूरी छै

जतय बनेबाक हूअए सपनाक घर, ओतय
जर्जर पुरान घरक खसब जरूरी छै

सोझसाझ-सनगर बनयबा लेल गाछ कें
छिड़िआयल डारि-पात पांगब जरूरी छै

भ' सकैछ अपनहुँ अस्तित्व छाउर-पिंड, मुदा
यथास्थितिक परती कें तोड़ब जरूरी छै

गुट-गिरोह-मठ केर गन्हायल माहौल मे
'अरबिन' गुण-गंध बलें गमकब जरूरी छै

जीवनक जे अगिनपथक प्रसाद हेताह

जीवनक जे अगिनपथक प्रसाद हेताह
जीजिविषा मे से अजित आजाद हेताह

बुड़ि, जे निष्ठा कें सदिखन मोन रखताह
ओ सियासी खेल मे बरबाद हेताह

माथ अछि जिनकर सिंहासनक चरण पर
लोक-भूमिक माटि मे ओ खाद हेताह

ओ विधान मे अनुकम्पा केर प्रावधान सँ
मूल भ' सकलाह नहि, अनुवाद हेताह

अछि हुनक निर्माण मे कोनो खराबी
उच्छिष्ट छथि ओ त' कोना उत्पाद हेताह

धन्य! 'अरबिन' तोँ एलह गजलक जगत मे
फेर केओ 'खुसरो' की तोहर बाद हेताह

क्षीण छी, लघु छी, धरा के धूल छी हम

क्षीण छी, लघु छी, धरा के धूल छी हम
किन्तु उनचासो पवन-प्रतिकूल छी हम

अति सुकोमल ठारि पर छी, फूल छी हम
किन्तु शिव के, सत्य के समतूल छी हम

वेद, बाइबिल आ कुरानक मूल छी हम
छात्र छी, गुरु छी, स्वयं स्कूल छी हम

धर्म-युद्ध लेल शिवक त्रिशूल छी हम
भगवती कालीक प्रिय अड़हुल छी हम

सर्वधर्म-समभाव केर ओसूल छी हम
छी कबीरा, बाबरा बैजू, फिदा मकबूल छी हम

साफगो छी तें ने 'अरबिन' शूल छी हम
नइ असुन्दर, फूसि कें अनुकूल छी हम

संसद केर फोटो मे किछुओ नहि हेर-फेर

संसद केर फोटो मे किछुओ नहि हेर-फेर
सांपनाथ, नागनाथ, इएह दुनू बेर-बेर

लगैत अछि अजुका ई दिनो अन्हार रहत
सुरुज मलान छथि एखनहुँ उबेर बेर

एकबाली लोक सभक दागल सभ साँढ़ छै
तोड़ि रहल जहपतार करचीक सभ घेर-बेढ़

मातल आर्केस्ट्रा मे आजुक सभ गोपिका
राधिकोक टेर नहि, मुरली के टेर बेर

घामक टधार बहैछ श्रीमन्तक माथ पर
उमकल सीमान पर जन-गण के जेर-बेर

गाम भेल नन्दीग्राम, घर-घर सिंगुर भेल
'अरबिन' सभ संग रहू, एहन अन्हेर बेर

बदलैत व्यवस्था मे अद्भुत ई न्याय भेल

बदलैत व्यवस्था मे अद्भुत ई न्याय भेल
नन्दीग्राम, विश्वग्राम दुनू पर्याय भेल

परदेसी पूत भेने परती सभ खेत रहल
तगादा दुआर चढ़ल, घर हाय-हाय भेल

सिरचढ़ बेगरता सिंगुरी समाज मे
चिन्ता बहिन हमर, दुख हमर भाय भेल

दाय हमर जीवन छल सौंसे समाज केर
किछु पांति कागज पर, मात्र हमर आय भेल

नारा अनेरक अछि बुलडोजरक विरोध मे
समतल जँ भूमि भेल, ई कोन अन्याय भेल

बैरिन भेलीह जखन तकनीकी दाय-माय
रौद, पानि, हवा, माटि– इएह हमर धाय भेल

चे-ग्वेरा, हो ची मिन्ह, कास्त्रो फिदेल जकाँ
'अरबिन' संघर्ष करी, यैह उचित राय भेल

सड़ि रहल अछि धार के ई पानि जबकल

सड़ि रहल अछि धार के ई पानि जबकल
छै कतहु एकर धवल-प्रवाह ठमकल

हम त' अपन बूझि अपन डर कहलियनि
जानि नहि की बूझि हुनकर कंठ सरकल

माटि भेटलै, पानि भेटलै, रौद भेटलै
तखन जाक' बीज कोनो ठाम पनुकल

जाहि रिमझिम सँ फड़य फुलबाड़ी मे फूल
मेघ मे अछि से कहाँ निनाद कलकल

एकटा बीया ने बाँचत, माटि झड़कत
राजधानी सँ बहल अछि ई हवा झड़कल

संग छथि ओ आ इजोरिया राति सनकल
तेँ ने 'अरबिन' आगि भीजल, गजल गमकल

अछि अपन कर्तव्य पालन मे कुकुर सभ होशियार

अछि अपन कर्तव्य पालन मे कुकुर सभ होशियार
सगर दिस लागल मनुक्खक हाड के बड़का पथार

ई सुशासन कि कुशासन, प्रश्न अछि सभ ठोर पर
लोक सकदम, कलम बन्दी आर हाकिम बेसम्हार

कार खोजै छै एम्हर फुटपाथ पर सूतल शिकार
यम अलै छथि एहि नगर विभिन्न वाहन पर सवार

क्रूर रैजकी-तंत्र मे नइ आँखि मे स्वप्नक ठहार
आँखि केर सभ कोर मे पाइए नचै छै, हौ भजार

एक कनमा निन्न नइ, नइ चैन अछि एकहु छटाक
छै इजोरियाक भ्रम सँ चिक्कन गाम के निसबद अन्हार

आब मसानी टोल सभक श्राद्ध आ कि मोक्ष लेल
टोल के हे देवता! सभटा तोरे पर छार-भार

बाढ़ के फोटो देखाउ गरजैछ सूखल खेत पर
मेघ ई बेपानि 'अरबिन' बनल मद्यः फरुखसियार

अजुका एहि विकराल काल मे कान्तासम्मित बात बखानत

अजुका एहि विकराल काल मे कान्तासम्मित बात बखानत
कोनो कुरूप वस्तु लेल शायर सुन्दर शब्द कतय सँ आनत

नवतुरिया सज्ञान भेल त' गिरैत-उठैत दुनिया कें नापत
जिनका बस लबड़इ केर दाबी, तिनकर बात किए ओ मानत

कतय नीर आ कतय क्षीर अछि, कोन ताख पर पड़ल विवेक
मत्स्य न्याय केर संरक्षक जे, हंसक पीड़ कोना ओ जानत

जीबि रहल अछि लोक रुदाली केर जीवन आचार जकाँ
दुख दिनचर्या बनल, लोक सभ एक्के बात पर कत्ते कानत

संवैधानिक पदधारी लेल 'अरबिन' अछि फुटबॉल विधान
साँढ़ एखन मदमस्त भेल अछि, घेर-बेढ़ ओ किए गुदानत

ई छुछुन्नर, ऊ चमेलीक तेल बंधु

ई छुछुन्नर, ऊ चमेलीक तेल बंधु
वस्तु अछि सहमेल कि बेमेल बंधु

गूँह गिजैत संग छलहुँ भरि राति, भोरे
शिल्ड ओकरा आ हंमरा जेल बंधु

ओ गेला संसद हमर सभ आस लेने
आब ओहि तिल मे कतय किछु तेल बंधु

आब जनसंख्या घटैक उम्मीद जागल
बाघ-बकरी मे भेलैए मेल बंधु

तेल आ फूलेल सँ ओ भ्रम पसारैछ
खोल सँ बाहर परम बकलेल बंधु

नइ कतहु एकान्त, कतहु चैन 'अरबिन'
सगर अन्हर दौड़, ठेलम-ठेल बंधु

भरि-भरि पोखरि घाम चुअयलौं

भरि-भरि पोखरि घाम चुअयलौं
तखन माथ पर छप्पर पयलौं

किछु नहि चाही, पेट भरल अछि
रोटी मंगलहुँ थप्पड़ खयलौं

आबो त' सम्मान दिआबू
कतेक गीत अहाँ लेल गयलौं

एखनो छी पिंजरे मे बान्हल
कतेक सुग्गा-पाठ पढ़यलौं

गारि सँ बिछलक आइ खबास
जेहने कयलौं तेहने पयलौं

मरल आत्मा जहिया-जहिया
तहिया माथा भद्र करयलौं

'अरबिन' मुँह अपने सन भेल अछि
बहिरा सभ केँ पीड़ सुनयलौं

कोशी सँ मारल प्रदेश मे कालक छूटल निशानी देखब

कोशी सँ मारल प्रदेश मे कालक छूटल निशानी देखब
कालाजर, हैजा, फौती के ओझरल ससरफानी देखब

हाथ कटेने जय-बीरू आ देह बिकैत बसन्ती केर
ठाकुर बौका, हमर जिला मे .गब्बर के कप्तानी देखब

झड़कल सभटा आमक गाछी, शीशम-सखुआ जरना भेल
आउ, एम्हर त' अपन आँखिए सुरुज के किरदानी देखब

खदहा मे छै डगर कि डगरे मे खदहा छै गामे-गाम
राजडगर पर फगुआ खेलैत सत्ता केर बड़मानी देखब

नवतुर लेने झालिक जिम्मा जय-जयकारक कीर्त्तन मे
पेट मे खढ़ ने सींग मे तेल अछि, छुच्छे सूखल फुटानी देखब

लुच्चा-लफुआ-भरुआ-कुकुर, 'अरबिन' हमर इलाका मे
एक सँ बढ़िक' एक तखल्लुस रखने हिन्दुस्तानी देखब

लीक छोड़ि जे चलल सियार

लीक छोड़ि जे चलल सियार
बनि गेल एक दिन चौकीदार

नोर सँ चिक्कस सानै छै
बिरहिन के नित इएह व्यवहार

आरक्षण कोटा मे भेटल
मुसहर सभ कें कालाजार

दिन मे पॉकेट मारै छै
राति मे जे छै पहरेदार

बेचिक' घोड़ा सुतल बुड़ि
सिरहौना सँ तकिया पार

मोछ उमेठय रहि-रहिक'
हंसक सोझाँ कौआ ठाढ़

बोल कबीरक बाजै छै
माथा पर छै काल सवार

संसद मे घुसिआयल जे
सात जनम लेल केलक जोगार

आगि मुतै छै, चरफर छै
सत्ता के छै चढ़ल बोखार

एखन सोझाँ अछि सोनक थार
'अरबिन' छोड़ू प्रेमक भार

हवाक आँचर धएने लुत्ती जानि कखन धधरा भ' जेतै

हवाक आँचर धएने लुत्ती जानि कखन धधरा भ' जेतै
के जानय जे संरक्षण सँ कोन सुतार ककरा भ' जेतै

एखन भनहि ऑक्टोपस सन अछि ओ जोगार के माया सँ
जँ बौरयलै लोक त' पट्ठा सिमटि-सिकुड़ि मकड़ा भ' जेतै

शैशवकाल मे प्रेम एखन अछि अत्तर भीजल रुमाल जकाँ
जखन जुआनी पर एतै त' इन्द्रधनुष अँचरा भ' जेतै

ततेक बेर दोहरायल गेल अछि आरक्षण, सामाजिक न्याय
अचरज नइ जे एक दिन जाक' ई नारा फकरा भ' जेतै

ज्ञान-कला सभ क्षेत्र पर एखन सिरचढ़ भेल अछि नेतगिरी
तेहन ने छुतहा रोग बनल अछि, जानि कखन ककरा भ' जेतै

बसल अनेको नीलकंठ ओहि निलहा आँखिक सागर मे
पिपनी एक बेर उठल कि 'अरबिन' नीक हमर जतरा भ' जेतै

बिनु खयने गेला ओ, घरनी कें तारि गेला

बिनु खयने गेला ओ, घरनी कें तारि गेला
कहलनि त' किछु ने, मुदा हमरा उघारि गेला

दीप जकाँ जरला ओ, तर मे अन्हार रहल
जग सँ त' जीतल छथि, घरे मे हारि गेला

अंगा आ गमछा के फाटब पर दुसलनि ओ
नीचाँ दिस अबितहि ओ मुँह कें सम्हारि गेला

बेर-बेर देखै छला अयना मे मुँह अपन
जाइत-जाइत अयना पर पाथर बजारि गेला

श्वेत-वसन, धवल-रूप, मंच पर मधुवाणी सँ
सद्भाव कें जारि गेला, लुत्ती पसारि गेला

जहिया सँ उपकरण बनबा सँ बाज अयलौं
तहिए सँ 'अरबिन' ओ हमरा धिक्कारि गेला

निन्न मे नेना जे बिहुँसल, इसक जगमग चान जागल

निन्न मे नेना जे बिहुँसल, इसक जगमग चान जागल
सृष्टि मे सुतल सगर निश्छल सरल मुस्कान जागल

कोट पर मेडल आ हमर पीठ मे छूरी धँसल अछि
राजनीति के किन्तु हमरा एखनहुँ की ज्ञान जागल

वातानुकूलित ट्रेन चलल छै गरीबक नाम पर
शासनक मृत आत्मा मे छै की एखनो जान जागल

छटपटायल माछ कतेक बेर बालुक भीत पर
मरि गेलै ओ टक लगौने, नइ कोनो भगवान जागल

चोट खाय छै बेर-बेर शांति-मैत्रीक नाम पर
किन्तु की मिसिओ बराबरि देश के अभिमान जागल

स्वार्थ-कोमा मे हुनक अछि आँखि भसिआयल दुनू
बेर-बेर लग गेला 'अरबिन' नइ कोनो पहिचान जागल

मोन अहाँ के निछहा पागल

मोन अहाँ के निछहा पागल
शुभ-सम्मति जँ बिरथा लागल

सदिखन सत्य ठाढ़ अछि अविचल
विचलित लोक चहुँदिस भागल

आइ हुनक छाया-छवि देखल
आइ भाग अछि हम्मर जागल

नइ टूटत ई माला किन्नहुँ
प्रेम-ताग सँ ई अछि तागल

नांगट साँच जँ देखय चाही
वस्त्र उतारू, सभ अछि दागल

नइ सम्हरै छह, देह कँपै छह
'अरबिन' ई हथियार छह मांगल

कतहु रूद्र त' कतहु महेस

कतहु रूद्र त' कतहु महेस
जेहने देस हुअय तेहने भेस

पेट माथ पर रहै सवार
देह सुटकिक' खिखिर शेष

ने अयबाक छल अकिल, ने आयल
व्यर्थ भटकला देस-विदेस

गाम मे बाजय ढोल मुदा
ने बएना, ने कोनो सनेस

अंतिम क्षण मे अपनक आस
'यात्री' घुरलाह 'ठक्कन' भेस

कनिञो लुत्ती, बेसी छाउर
बचै मनुक्खक इएह अवशेष

भद्रलोक पर दाग बहुत
'अरबिन' भने भेला भदेस

के कोना कें पेट भरैए

के कोना कें पेट भरैए
उत्कंठा सँ लोक मरैए

हमर हँसब देखि-देखि कें
भाय-भैयारीक देह जरैए

धात्री केर छतनार गाछ मे
एखन कनैलक फड़ फड़ैए

मिठहा बानी सुनिते मातर
हमर टोलक लोक डरैए

एहि ठाँ मुसरी दंड पेलै छे
ओहि ठाँ सांसद घर भरैए

जे जे काज नै करक चाही
'अरबिन' सेह सभ लोक करैए

हवा नियम सँ बहबे करतै

हवा नियम सँ बहबे करतै
गाछक ठारि त' झुलबे करतै

लिखल चहुँतरफ कतेक मनाही
आगिमुतना त' मुतबे करतै

लिबैत रहत त' जनम सोगारथ
तनल रहत त' टूटबे करतै

दुख कोनो की ओकरे टा छै
कनना छै ओ, कनबे करतै

नै पाठक के चिन्ता 'अरबिन'
नीक गजल कें पढ़बे करतै

पेट सँ, फेर देह सँ जोड़ल गेलौं हम

पेट सँ, फेर देह सँ जोड़ल गेलौं हम
यैह गठबंधन सँ फेर तोड़ल गेलौं हम

खेत हमरा गेल मानल बेर-बेर
तेँ बेगरताक हर सँ कोड़ल गेलौं हम

बड़ गन्हयलौं, नगदी हेबा सँ पूर्व धरि
जहिं-तहिं पटुआ जकाँ गोड़ल गेलौं हम

एहन लरगुज नइ छलौं, लोहा छलौं हम
आगि-चोटक संधि सँ मोड़ल गेलौं हम

काटिक' पेड़ल गेलौं, रस लेल कुसियार सन
अस्तित्व सिट्ठी भेला पर छोड़ल गेलौं हम

ई गजल कहबा लेल 'अरबिन' बेर-बेर
स्मृतिक सभ थाल-कादो सँ बोड़ल गेलौं हम

सेन्ह पड़ै छै नित घर-घर मे, घरबै सभ कंगाल बनल छै

सेन्ह पड़ै छै नित घर-घर मे, घरबै सभ कंगाल बनल छै
कतय जाइ, गोहारि करी हम, लुचबे सभ कोतबाल बनल छै

एहि नगरक भगवाने मालिक, सेहो बनल छथि पाथर के
भक्त सभक त' अजगुत माया, उच्छिष्टे निरमाल बनल छै

सगर गाम सुनामी-गुम्मी, सगर दिशा लागल दिक्शूल
कोन दिशा सँ घोंसिआओत सुख, दुखे जखन दिग्पाल बनल छै

मोचड़ल-सोचरल जन-प्रतिनिधि छल, संसद मे प्रवेशक बेर
कलफ आइ छै सनगर-करगर, धोती तनि तिरपाल बनल छै

पूजन-कीर्त्तन-भजन-आरती, रैजकी प्रभु के जय-जयकार
वाम-दहिन के बात नइ पुछू, सभ सूबा बंगाल बनल छै

नदी बहौ उन्टा कि सुन्टा, बकरी छकरीक मोले की
रच्छ केकर एहि घाट पर 'अरबिन', [illegible] जँ महिपाल बनल छै

कोना अजुका दिन ससरतै, राति कटतै हौ भजार

कोना अजुका दिन ससरतै, राति कटतै हौ भजार
एक-एकटा पल हमरा लेल सुनामी के प्रहार

बिसरि गेल अछि मोन पछिला बेर कहिया खुश भेलौं
डाकपीन आइयो ने अनलक अछि कोनो खुशखबरीक तार

ई महाजन, ऊ महाजन, नहि कियो दैछ रामबाण
बाण बेगरताक अछि भोंकल करेजक आर-पार

सभक जीवन लेल, आब अछि पूत कें ग्रसने अन्हार
बजरगुम्मी तोड़ि, करू किछु आगि बारै के जोगार

आधा-छिधा रहि जाइ छै एहि जीवनक सभटा गजल
ओझरल रदीफो-काफिया आ माथ पर मिसरा सवार

पीड़ सँ लड़बा ले' राखय पड़त अपनहि पर भरोस
पीड़ हरबा लेल 'अरबिन', नहि ऐताह कोनो अवतार

कानिक' बड़ीकाल नेना हारिक' चुप भ' गेलै

कानिक' बड़ीकाल नेना हारिक' चुप भ' गेलै
लगैए एहि ठाम के सभ कान दिल्ली भ' गेलै

पागधारी मगन छथि अपने बनायल कूप मे
हाथ भरि नम्हर जखन कि टीक दिल्ली ल' गेलै

पेट, बासन, मुँह, जेबी, लोक-वेदक सभ सिंगार
गाम-घर-सीमान सभ कें छूछ दिल्ली क' गेलै

ठेठ दिल्ली सँ चलल प्रगति के जरिगर सुनामी
अनघोल दिल्ली मे भेलै जे देश दिल्ली भ' गेलै

जे भेला अवतार, पैगम्बर, मसीहा सन कनेको
सभ कें पोसुआ बना 'अरबिन' दिल्ली ल' गेलै

मोन के छह-पाँच छोड़, गिरह राखब नीक नहि

मोन के छह-पाँच छोड़, गिरह राखब नीक नहि
हाथ मे साबुन ल' क' फागु खेलब नीक नहि

आदम जकाँ जन्नत मे वर्जित फल पर नै हक लगाउ
क्षण भरिक जे खेल, सदिखन सैह खेलब नीक नहि

शब्दक औजार सँ भड़कायब लोकक भाव के
खेल छै ई सहज किन्तु ई खेल खेलब नीक नहि

'ढाइ आखर प्रेम' पढ़ि पंडित भेला फक्कर कबीर
अहूँ एकरा खेल बूझि एकरा सँ खेलब नीक नहि

हे, मखौलक वस्तु नहि थिक प्रकृति केर सभ उपादान
माटि-पानि कि रौद-हवा सँ द्युत खेलब नीक नहि

कखनो आजादी त' कखनो लोकतंत्रक खेल-बेल
पहिर खद्धर खेलैत अयलहुँ, आर खेलब नीक नहि

मृत्यु सँ खेलौर बूझि खेलल सगर जिनगीक खेल
आब लगैछ जिनगी सँ 'अरबिन' एना खेलब नीक नहि

की कही एहि बाढ़ि मे डगरक कथा-खिस्सा खराब

की कही एहि बाढ़ि मे डगरक कथा-खिस्सा खराब
समधिआरय मे खराब, ससुरारि मे बेसी खराब

बाढ़ि मे छप्पर निपत्ता, पोलीथिनक स्तर खराब
चाउर खरबहे छलै, दालि किछु बेसी खराब

बाढ़ि मे कतय भेटत किछु नीक बोली कि वचन
मुखियाक बोली ओल सन, बीडीओ के मुँह खराब

डाक्टरक कोन कथा, एहि बाढ़ि मे औषधि खराब
एहि खरबहा हाल मे धीया-पूता के मोन खराब

बाढ़ि चढ़ल अछि, सूचना-संवाद के साधन खराब
हाकिम सभक वाहन खराब, नाह के पेनी खराब

की लिखै छी बाढ़ि पर 'अरबिन', अहाँक माथा खराब
मतला त' बकबासे छल, मकता कने बेसी खराब

एहि अकाबोन मे जँ होइतय मीत कोनो

एहि अकाबोन मे जँ होइतय मीत कोनो
कान मे गबितय जे आसक गीत कोनो

राति मे होइतय जे हमरा निन्न बढ़िया
किए देखितहुँ स्वप्न मे अतीत कोनो

कंठ अछि अवरुद्ध, सूखल ठोर हमर
सर्द रातिहु मे खसैछ नहि शीत कोनो

यार के होसियारी सँ भेल अछि देह काँट
संग रहैए, नहि मुदा परतीत कोनो

गाबय चिड़ै, भौंरा तखन के लग्न शुभ
छै जरूरी एहने आब बनायब रीत कोनो

मांगिते भेटितय से लेलहुँ छल सँ, मीता
भेल नहि एहि मे अहाँ के जीत कोनो

शेर पर इरशाद आ गजल पर 'वाह, वाह'
सभ केओ छथि की आजाद अजीत कोनो

अनवरत भूकम्प के छै दौर तखनहुँ
ठाढ़ 'अरबिन' करू बालुक भीत कोनो

क्षुद्र नर सँ इन्द्र के अवतार भेला

क्षुद्र नर सँ इन्द्र के अवतार भेला
राजा भेला, मोटियाक दुख सँ पार भेला

डांड़ मे तरुआरि आ सिर मुकुट भेटलनि
सत्ताक रथ पर ओ जख़न असवार भेला

अंतर एतेक टा भेल मतदानक पछाति
हम एकटा टोल त' ओ अजगुतक संसार भेला

सुनैत रही जे भाग घुरहु के जागै छै
ओ त' सद्यः छाउर सँ ताप के भंडार भेला

अलबत्त तरक्की देखि, चकित 'अरबिन' छथि
एक दिन चप्पल छला, आब ए.सी. कार भेला

कथी जोतबय, कतय रहबय, सभ डगर छेकल छै बाबू

कथी जोतबय, कतय रहबय, सभ डगर छेकल छै बाबू
चास-बासक नाम पर दुइये धूर टा बांचल छै बाबू

बैरी भेलै पनिजाब, पूतक मुँह देखला कतेक मास
चुल्हि मे नहि आगि, टिनही थार खरकट्टल छै बाबू

गारि सुनि-सुनि घास अनलहुँ, नेना लेल दूधक आस मे
सेहो दुधगरि गाय महाजनक दुआरि पर बान्हल छै बाबू

मानिजन-मुखिया कि नेता मे बँटल सरकारी खैरात
किछु सोहारी नोन लेल मोन दैव पर टाँगल छै बाबू

जहाज सँ टपकल ई बोतलक पानि हमरा नहि सोहायत
बाढ़िक गौंजायले पानि हमरा लेल गंगाजल छै बाबू

हमरा की, जतय रहओ जीबैत रहओ धीया-पूता संग
देवता-पित्तर सँ हमर पूत ई मांगल छै बाबू

राति मे अन्हार रहै, अन्हार छै, अन्हार रहतै

राति मे अन्हार रहै, अन्हार छै, अन्हार रहतै
दीप लड़लै, लड़ै छै, लड़ै लेल तैयार रहतै

सृष्टि अपन सौन्दर्य-शीर्ष पर रहतै अविचल
हाथ मे शायरक जाधरि ग़जलक हथियार रहतै

बाढ़ि, अगिलग्गी कि अन्हड़, सभ मुदै अपना जगह
उगैत रहतै फूल, जाधरि भंवर के गुंजार रहतै

रोज धरनीक ठोर पर चमकैछ हँसी विज्ञापनी
की हेतै तहिया, जखन नहि हमर मुँह चिन्हार रहतै

व्यर्थ अछि एहि विश्व कें चांगुर मे राखैक कुप्रयास
रहत ई ओजोन अक्षत, अक्षयक विस्तार रहतै

नहि रहब 'अरबिन' सदति हम, एहि गजल पर
जे कि पढ़ताह आ कि गुनताह, तिनकरे अधिकार रहतै

दुख कतेक छै तकर मात्रा मुँह सँ बाजल जायत नहि

दुख कतेक छै तकर मात्रा मुँह सँ बाजल जायत नहि
ई हृदय के भाव छै तरजू पर तौलल जायत नहि

ताप अपन चरम पर हो, तखन जे सिहकय बसात
से पुलक-सिहरन कोनो कैदी सँ भोगल जायत नहि

बैसिक' सुविधा भोगय तकरा लेल आजादीक अर्थ की
खुजल पिंजरा छै मुदा सुग्गा ई बाहर जायत नहि

ओस घोंटत, थूक चाटत, नहि पियासे प्राण देत
मानिजन भरोसे लोक जे, सागरक तट पर जायत नहि

ई छियै मिथिला, एतय एका के गपशप फुसि-फासि
बेंग सन कुदकत एतेक, सीमा मे बान्हल जायत नहि

कोनो एहनो दिन हेतै 'अरबिन' सपना अबैए रहरहाँ
माछ छोटका माछ केँ, काँकोड़ि के काँकोड़ि खायत नहि

डोरि सन जिनगी मे अछि सगरे पड़ल गिरह हजार

डोरि सन जिनगी मे अछि सगरे पड़ल गिरह हजार
बतहा मनुक्खक माथ पर सदिखन कोनो चिंता सवार

विश्वव्यापी भेल छी हम भ्रम कि दुराग्रह जकाँ
मोन पेंटागॉन बनल अछि, देह पर गोधरा सवार

बनि अतिथि घर छेकइए रोग-शोकक रक्तबीज
जाइत अछि पैरे मुदा अबैछ घोड़ा पर सवार

ई विरोधाभास छै कि नियति कि अस्थिरता हमर
कखनो नाविक छी त' कखनो नाह हमरा पर सवार

भावना-संवेदना नहि, नहि कोनो टा सरोकार
नै जानि किए एहि पीढ़ी केँ छै मशीन बनैक धुन सवार

जनपथिक कातहि रहब, एहि राजपथक रेस मे
केओ चढ़ल परमाणुक घोड़ा, राम रथ पर केओ सवार

ओम्हर बेगरता हंकारय, एम्हर चरिआबय गजल
माया ली कि राम 'अरबिन' माथ पर दुविधा सवार

छै अमरीकी भोज मे बहु-विध व्यजंन, धनि भाग

छै अमरीकी भोज मे बहु-विध व्यजंन, धनि भाग
वियतनाम चिखलह त' लैह चिलीक परसन, धनि भाग

अल साल्वाडोर, ग्वाटेमाल, निकारागुआ मे
देलनि सभ लहास कें प्रभु साक्षात दरसन, धनि भाग

विश्वग्रामी सभ्यता, उदारीकरण केर संस्कृति
द्रव्य नीति मे हेतै मनुपुत्र सभक श्राद्ध-तर्पण, धनि भाग

अल्पमत, बहुमत कि विश्वासमत पर मत-विभाजन
जनमत सँ जनमल सदन मे थतमत के प्रहसन, धनि भाग

जीयब त' की-की ने देखब, इएह टा बांकी बचल छल
राष्ट्रीय प्रतिनिधि-सदन मे नोट के नांगट प्रदर्शन, धनि भाग

सत्य-मिथ्या, रौद-छाही मे भ्रमित 'अरबिन' ई आँखि
दूर-दर्शन पर लगैछ हत्यारा हमर कतेक सुदर्शन, धनि भाग

नहि मरल अछि, ई कने बीमार टा अछि

नहि मरल अछि, ई कने बीमार टा अछि
मात्र सत्ता के चढ़ल बोखार टा अछि

एहन महगी मे कतय छप्पन टा व्यंजन
छुच्छ सोहारीक संग कने अचार टा अछि

परमाणु-कचरा सँ इजोतक भ्रम नै राखब
एकर वश मे बस अमिट अन्हार टा अछि

दस-बीस टा गुंडा रहै छै मुखर सदिखन
बौक बनल लोक लाख-हजार टा अछि

नै छथि लोकप्रिय, कर्मठ कि जनसेवीए ओ
वोट लेबय लेल ई प्रचार टा अछि

अक्षौहिणी सेना सँ 'अरबिन' कोन काज
संग हमर, बंधु, हमर विचार टा अछि

एहि गजलक मकताक विचार अजित कुमार आजाद द्वारा प्रदत्त।

छिछिआइछ उत्कंठा हमर, खन आर लग खन पार लग

छिछिआइछ उत्कंठा हमर, खन आर लग खन पार लग
हमर लिखल उजास सभक अछि मोल की संसार लग

जालक मुँह मे बोल नहि, छपय बहेलिया केर बयान
चिड़ैक बोली बुझत से नहि लूरि छै अखबार लग

रंग-बिरही जिनिस सँ ठांसल रहै सभटा दोकान
किन्तु जन-बेचैनी के औषधि नै रहै बजार लग

एक समझौता सँ शासन वामनक सरकस बनल
नहि छलै पट्ठा कोनो दमगर बचल दरबार लग

बुन्न मे सागर भरल, अणु मे भरल ऊर्जा अपार
बिन्दु सरिपहुँ लम्बवत भ' ठाढ़ होइछ आधार लग

लोक लादल नाह बाढ़िक पानि मे अबतब मे छै
ओ खिंचा रहल छथि फोटो बान्ह पर पतवार लग

नफा के वन-तंत्र मे पग-पग बिचौलिया रक्तबीज
अकिल गुम अछि, ककर मार्फत अर्जी दी सरकार लग

उपरचन्ती माल के चस्का चढ़ल 'अरबिन' एतेक
बनल छी लगुआ कि भिरुआ, जायब नहि अधिकार लग

जनहित के एहि बजट मे एखन वित्तीय क्षति अनुमाने पर अछि

जनहित के एहि बजट मे एखन वित्तीय क्षति अनुमाने पर अछि
हमरा हरदम किए लगैछ जे संकट हमर प्राणे पर अछि

अयोध्या मे रामलला लेल किए पड़ल भूइयाँ के संकट
भू-अर्जन के अखिल भारतीय भार जखन हनुमाने पर अछि

सगर देश के सभ इनार मे बइमानी केर भांग घोरायल
बनरबाँट मे बइमानी के जाँच-भार बइमाने पर अछि

लूटि-कूटिक', भीख मांगिक' पेट भरैए लोक, तखन
संविधान कें आत्मघात सँ तोड़ैक दोष किसाने पर अछि

मार्क्स आ एंजेल्स कें पीयल, घोंटल लाल-किताब मुदा
मोनक कोनो अन्तर्तम मे बस भरोस भगवाने पर अछि

गजल कहैत 'अरबिन' जेना हम परकाया-प्रवेश कएलहुँ
ने निज के अछि बोध ने अपन चित्त आ अकिल ठेकाने पर अछि

गीत अभावक बनि गेल फकड़ा

गीत अभावक बनि गेल फकड़ा
चाउर अलोपित, छुच्छे खखड़ा

तेना मनुक्ख माया मे लटपट
जेना जाल मे मस्त छै मकड़ा

राज मे सभ धन बाइस पसेरी
क्विंटल के परवाहि छै ककरा

बलि पड़ब छै लेख मे लिखल
छागर कही कि बकरी-बकरा

पीड़क मोल छाउर भ' जाइ छै
जखन कहै छी एकरा-ओकरा

'अरबिन' हमर गजल धीपल छै
धाह लगै छै जकरा-तकरा

एना किए मन्हुआयल रहै छह

एना किए मन्हुआयल रहै छह
तों की नन्दीग्राम रहै छह

तिक्ख रौद हमरा सँ पूछय
घाम किए चुबैत रहै छह

दुख! किए नहि चिन्हलहुँ तोरा
तोँ त' अबिते-जाइत रहै छह

एक सदी पर दरसन देलह
सुख! कतय, कोन ठाम रहै छह

रोग-शोक खिसियाक' पूछय
एना कोना मुस्काइत रहै छह

पूछि-पूछि अयना सँ हारलहुँ
तों ककरा खोजैत रहै छह

'अरबिन' एना कतेक दिन चलतह
गारि-बात पर बौक रहै छह

चान पर बस्ती बसाओल जा सकै छै

चान पर बस्ती बसाओल जा सकै छै
मैथिली मे गजल लिखल जा सकै छै

असीमित विस्तारक आकास छल सपना हमर
आसक ताग मे ओ बान्हल जा सकै छै

जे कहब नहि मोट सन पोथी सँ संभव
नोरक किछु ठोप सँ ओ कथा बाँचल जा सकै छै

तोड़िक' आधिपत्य एहि कुलकंटक गुलाबक
कैक्टसो सँ घर सजाओल जा सकै छै

नित्य एहि दिन-राति केर मिलन बहन्ने
एसगरहु मे गीत गाओल जा सकै छै

जँ करी सभ लोक मिलि भगजोगनी-प्रयास
अन्हार केँ धूरा चटाओल जा सकै छै

जखन धरि खेतिहर छै, कवि छै एहि धरा पर
किन्नहुँ नहि ई सृष्टि हारल जा सकै छै

खेतिहर के जँ भेटय जीबैक जमानत
चान पर सँ धान काटल जा सकै छै

दुख अबै छै-जाइ छै अपन डगर 'अरबिन', मुदा
एक चुटकी सुख भरोसे सुख सँ जीयल जा सकै छै

तुरछल हमर सौभाग्य हमर छाहरिक छाहरि सँ भागय

तुरछल हमर सौभाग्य हमर छाहरिक छाहरि सँ भागय
जेना जड़काला मे सेरायल लोक पर सँ रौद भागय

भाव के लतमर्दन करय, सटका बजारय बेर-बेर
हीत-मीतक चोट सहितहुँ, मोन सँ नइ मोह भागय

निन्न के कोरा मे रहितहुँ किछु सजग भ' क' रही
चोर दरबाजा बहुत, देखब, कोनो सपना ने भागय

रूप-रस लोभी भ्रमर सन छै पुरुष के जाति ई
सम्बन्धक सिक्कड़ि सँ बान्हु, उबिक' छलिया ने भागय

इजोत सँ सकपंज छथि काजरक घर मे रहनिहार
शायर सदति चैतन्य 'अरबिन' कोन बिध अन्हार भागय

मदन हमर आँखि पर रंगीन सन जाली लगाबय

मदन हमर आँखि पर रंगीन सन जाली लगाबय
पात हुनकर देह आ टुस्सी हुनक कनफूल लागय

नीलहा परिधान सँ छिटकैत हुनक देहक प्रभा
शरद मासक व्योम मे ज्यों पूर्णचन्द्र आभा जगाबय

हुनक प्रतिमा हृदय मे बद्धमूल भेल अछि एहन सन
जेँ कि अलगाबय छी बल सँ, हृदय के मर्म तंतु फाटय

ई हँसी, ई अंग-भंगी, ई कटाक्षक ननल बाण
मन्मथ के कारावास मे बान्हल कोनो कैदी की भागय

यक्ष छी 'अरबिन', धरा पर आयल छी हम शाप वश
मोन के परिताप सँ अंतःकरण झड़कैत धुआबय

भेड़िया-धसानक भीड़ सँ अछि हमर ढब-ढाँचा अलग

भेड़िया-धसानक भीड़ सँ अछि हमर ढब-ढाँचा अलग
शिल्प, शैली अलग अछि, भाषा अलग, परिभाषा अलग

जैह जनहितकारी नरोत्तम सैह रावण वेष मे
चलचित्रक दुनिया सँ छै अप्पन कहाँ दुनिया अलग

देह के साँचा एकहि रंग, पाप दुनूक मोन मे एक
हमर परमात्मा अलग छथि, हुनक छनि अल्ला अलग

वस्तु केँ चिन्हबा लेल अन्तर्दृष्टि चाही, औजार, कसबट्टी अलग
हमरा बूझल अछि करब नारियल सँ ओकर छिलका अलग

राष्ट्र संचालित करैत छथि तिनक छनि बुद्धि अपार
इण्डिया, भारत अलग सन आ हिन्दोस्ताँ अलग

होयबा ले मैथिली मे गजल भेल, गजलगो भेला बहुत
'अरबिन' सँ भेलै शेर मातबर, गजल के भुइयाँ अलग

नहि बाबा के सत्य-अहिंसा, नहि काका के पंचशील

नहि बाबा के सत्य-अहिंसा, नहि काका के पंचशील
अपन पुरखा केँ नकारी, हमसभ एतेक विचारशील

विश्वग्रामक रहनिहार आ छी कुशल व्यवहार मे
स्वयं अपन ताबूत अनलहुँ, स्वयं ठोकब एहि मे कील

राजकीय भवन मे बीतल हुनक जीवन सगर
कतय सुनलहुँ अछि बनाबैछ साँप अपना लेल बील

विकास-दर, सेंसेक्स सभटा अछि अपन उठान पर
अहाँ अपन नोर सँ करैत रहू चिक्कस केँ गील

मुख्यधारा सँ कटल छै, हाशिया के लोक छै
खेतिहर के पक्ष मे छै, छै ओकर सभ पेंच ढील

रहरहाँ ई कोंढ़ फाटय, कोना केँ 'अरबिन' जीयब
नहि कतहु सुनबाहि छै, व्यर्थ छै सभटा अपील

लोके लग सुदिभरना लोक

लोके लग सुदिभरना लोक
लोक-चुल्हि मे जरना लोक

देशक दशा बताबै छथि
डगर कात मे हगना लोक

मंच बिराजथि लोक-प्रभु
मंचक आगाँ भजना लोक

टेटर कहाँ देखाइ छै अपन
देखैत रहैए अयना लोक

ल' मे पारंगत साबिक सँ
द' बिसरल भिखमंगना लोक

दुआरि जखन बैरी भ' जाइ छै
घुरि अबै छै अंगना लोक

वेटन्यास के ठट्ठ मे 'अरबिन'
तोंही एकटा अदना लोक

नहि सुरुज के रौद मे, नहि आगि के धधरा मे छै

नहि सुरुज के रौद मे, नहि आगि के धधरा मे छै
जे अलौकिक ताप प्रेमक, माय के पजरा मे छै

नहि इजोरिया के किरिन मे, नहि हवाक मलार मे
जे कि शीतलता दुलरूआ माय के अँचरा मे छै

सगर पीड़ा सँ प्रबल अछि प्रसव-पीड़ा सृजन लेल
तकरा सहन करबाक कूबत माय छोड़ि ककरा मे छै

कविता, दोहा, गीत, कुंडलिया, हाइकू कि सूक्त वा
गजल मे ओ दम कहाँ जे मायक कहल फकरा मे छै

की कमान्डो-ब्लैक कैट, की आन श्रेणी के सुरक्षा
रक्षाक ओ अनुभूति कतय, जे माय के पहरा मे छै

नेना कें सभ संताप सँ बचयबाक ओ उद्दाम कामना
के एहन छथि, आबथि आगाँ, माय सन जकरा मे छै

माय के स्मरण कनिको आनैछ अहाँ मे नेन्हपन
जाहि वयस मे रही 'अरबिन' सभ हुनक छहरा मे छै

बाढ़ि मे झिंगुर जकाँ सभ लोक चिचिआबैत रहल

बाढ़ि मे झिंगुर जकाँ सभ लोक चिचिआबैत रहल
तटबन्धक विस्तार पर बाँसुरी बाजैत रहल

हाकरोसक सीमा छलै, नहि पहुँचलै दूर धरि
राजधानीक सभा-गृह मे बाँसुरी बाजैत रहल

गोष्ठी मे करैत रहला दलित-स्त्री पर विमर्श
घर अयलाह, घरनी कें ठोकलनि, बाँसुरी बाजैत रहल

जगत-तिरपेच्छन केलनि ओ राजदूतक वेष मे
घर एम्हर दोकान भेलनि, बाँसुरी बाजैत रहल

उद्‌बोधिता के कोंढ़ फाटल सदति अभिसारक पछाति
गुप्ता बनल, कुलटा कहाओल, बाँसुरी बाजैत रहल

हाथ मे रैजकी छै ककरो, केओ कुर्सी पर खन्हन
छथि रचै मे मगन 'अरबिन', बाँसुरी बाजैत रहल

चान जे कि घोघ मे छै सैह बुर्का मे नुकायल

चान जे कि घोघ मे छै सैह बुर्का मे नुकायल
साबिक सँ कोनो अढ़ मे अस्तित्व स्त्री के हेरायल

मोन मुसकायल कने सन, आँखि से अछि किछु नोरायल
एखन हमर स्मृति मे बिसरल कोनो स्मृति आयल

बेस फोंकहा भेल अछि पुरखाक गाड़ल खाम्ह ई
चार, कोरो, टाट, बत्ती नहि अनेरो ढनमनायल

खूब मुस्की दैछ एम्हर ताकिक' विधाता बहेलिया
जंजाल मे जग-जाल के, हम छी ओकर चिड़ै बझायल

दुर्, अयोध्या मे बनल अयना मे कोनो दोख छै
जखन ताकै छी, अपन मुँह अपनहुँ सँ नहि चिन्हायल

नहि कनिको पानि कि पहिचान पुरुषक आँखि मे
प्रश्न लेने ठाढ़ि कतेक गार्गी-मैत्रेयी आयल

नहि अहाँ सन केओ आयल जें कि एहि संसार मे
हमरो जकाँ एहि सृष्टि मे 'अरबिन' कहाँ केओ देखायल

मधुशाला मे बैसि करय छथि अपन-अपन कुनबा के गप

मधुशाला मे बैसि करय छथि अपन-अपन कुनबा के गप
जहर जहर छै, संग रहै छै, नहि छै कोनो निसां के गप

पड़ा रहल पजिया-पजिया कए जे जेकरा छै सुतरि रहल
छै ककरा पलखति जे करितय पीड़ितक हक-हिस्सा के गप

चोर-उचक्का के जिम्मा पर बाढ़िक राहत शिविरक भार
सर-सिपाही-अफसर मार्फत परोपकार-ममता के गप

ककरो मोन मे वर-वधु आ दू कूलक सम्बन्ध प्रमुख
ओ अरबधि कए, घूरि-फिरि के, करय टका-गहना के गप

अलग-अलग सभक प्राथमिकता आ कि पुर्वाग्रह अलग
'अरबिन' कयलनि मकइ के चर्चा, ओ कयलनि नेरहा के गप

कतेक नांघलहुँ टिल्ला-टाबर

कतेक नांघलहुँ टिल्ला-टाबर
डगर एखनहुँ उभ्भर-खाभर

सभ दिन नबका डगर भेटय छै
कतेक बौअयबह हओ यायावर

सेसर लोक कि ओकर तखल्लुस
राम नम्हर कि नम्हर बाबर

लाठी-चार्ज मरल-भूखल पर
देखि लिअओ सरकारक पाबर

वंश निपत्ता भेलै बाढ़ि मे
केकरा लेखे डीह कि डाबर

कोनो मंत्र नइ काजक 'अरबिन'
प्रलय काल मे श्री कि साबर

कतेक दुख देखल, कतेक संत्रास भोगल

कतेक दुख देखल, कतेक संत्रास भोगल
बहुत दिनुका साध सँ किछु गजल अरजल

के बताबौ कौशिकी के पुत्र सभक हाल मीता
कतेक हेलल, कतेक डूबल, कतेक भासल

ममता होअय कोहन, कने कोशी सँ पूछू
सभटा वर्णाश्रम व्यवस्था छनमनायल

लोकसभ दिल्ली पर बैसल बौक निसबद
चहुँदिशा मे मात्र कोशीक स्वर हहायल

आँखि के खोली बूझय के दम कहाँ छै आँखि मे
कएटा पथरल, सून किछु, कतेक नोरायल

नटिन छै, देवी छै कि वरदान 'अरबिन'
छै मुदा कोशी हमर अपनहि बिसायल

जे सोचै छी वैह जँ होइतय त' की छल

जे सोचै छी वैह जँ होइतय त' की छल
चान पाकिट मे हमर होइतय त' की छल

जाहि भरे करतै खिलाफति जोर द' क'
सभक मुँह मे चह से रहितय त' की छल

ल' द' क' भाग मे एकटा सहोदर
ओहो हमर पक्ष मे बजितय त' की छल

मात्र बोल-भरोस देबए लेल बाजल
छूछ हाथहु सँ कनेक लड़ितय त' की छल

चान आबै छै इजोरिया संग लेने
निन्न सेहो संग जँ लबितय त' की छल

जीविते नरक-जमलोक के दर्शन कराबय
ई अधक्की पेट नइ होइतय त' की छल

मीत हमर नारियर के गाछ 'अरबिन'
बर-बेगरता मे कनेक लिबतय त' की छल

टका तंत्र के अद्‌भुत माया, महिमा एकर अपरम्पार

टका तंत्र के अद्‌भुत माया, महिमा एकर अपरम्पार
बिनु जोतल-कोड़ल धरती सँ आब उपजतै छोटका कार

खादीधारी देह, मुँह मे अनहद जनसेवा के जाप
मित्र हमर शुरुआत केलनि अछि बिन पूजी के कारोबार

पुष्ट महाजन, तुष्ट आमजन, हृष्ट-पुष्ट अछि बानर दल
सभ केँ ओ संतुष्ट रखै छथि, बनल रहै छथि सूबेदार

उन्नत बीया, खाद आ कर्जा खेतिहर आगाँ पसरल छै
नित नव रूप बदलिक' आबैछ, जमींदार के करपरदार

मोंछ अमेठब 'अरबिन', दाबी दैत रहब हम बाहर मे
के बुझतै जे अढ़ मे हम छी महाबली के ताबेदार

खगल लग दानी सन आबी, ई केहन दन गप लगैए

खगल लग दानी सन आबी, ई केहन दन गप लगैए
तखन केमरा लग मुसुकाबी, ई केहन दन गप लगैए

निगमागम-पुराण सम्मत छै– जीव अंश परमात्मा के
मच्छर लेल कछुआ सुनगाबी, ई केहन दन गप लगैए

मारू, मारू, पारि भगाबू– सगर टोल के एक्के बोल
तखन करी रक्षक के दाबी, ई केहन दन गप लगैए

पेट बनाबैछ अपन ढंग सँ सभटा रिश्ता-नाता, तें
हम बिहारी, तू पनिजाबी, ई केहन दन गप लगैए

देखि रहल छी ओकर देह मे सगर उगल अछि काँट काँट
मीत जकाँ ओकरा पजियाबी, ई केहन दन गप लगैए

अमरबेल अछि, छद्म वेष मे अक्षयवट बनि आयल अछि
'अरबिन' ओहि छाहरि तर आबी, ई केहन दन गप लगैए